

डीडब्ल्यूआरबी 137

उत्तर पश्चिमी मैदानी क्षेत्र, उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्र एवं मध्य क्षेत्र की सिंचित दशा में समय से बीजाई के लिए जौ की नई किस्म



संकलन एवं सम्पादन

रमेश पाल सिंह वर्मा, ओमवीर सिंह, लोकेन्द्र कुमार, दिनेश कुमार, जोगेन्द्र सिंह, रेखा मलिक अजीत सिंह खरब, चुनी लाल, अनिल कुमार खिप्पल, अनुज कुमार, मंगल सिंह, सत्यवीर सिंह संतोष कुमार बिश्नोई, विष्णु कुमार, राजेन्द्र कुमार एवं ज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह



भाकृअनुप-भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान
ICAR-Indian Institute of Wheat & Barley Research
करनाल-132001, भारत | Karnal-132001, INDIA



अनुमोदन

जौ की किस्म डीडब्ल्यूआरबी 137 को भाकृअनुप-भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल, हरियाणा द्वारा विकसित किया गया है। उच्च उत्पादन क्षमता वाली एवं पीला रतुआ प्रतिरोधी छः पंक्ति जौ की किस्म डीडब्ल्यूआरबी 137 को भारत सरकार की फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन के लिए केन्द्रीय उप-समिति द्वारा जारी की गई अधिसूचना दिनांक 20 जनवरी, 2018 के माध्यम से उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्र एवं मध्य क्षेत्र में व्यावसायिक खेती के लिए अधिसूचित किया गया है। भारत के अन्य भौगोलिक क्षेत्र, उत्तर पश्चिमी मैदानी क्षेत्र में इसकी व्यापक अनुकूलन क्षमता को देखते हुए वर्ष 2021 में इसका क्षेत्र विस्तार के लिए अनुमोदित किया गया है।

जलवायु एवं क्षेत्र की उपयुक्तता

जौ की व्यावसायिक खेती की दृष्टि से उत्तर पश्चिमी मैदानी क्षेत्र को सर्वोत्तम माना गया है, इसके बाद उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्र एवं मध्य क्षेत्र की जलवायु अच्छी गुणवत्ता के जौ उत्पादन के लिए उपयुक्त मानी जाती है। उत्तर पश्चिमी मैदानी क्षेत्र को पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान (कोटा एवं उदयपुर संभाग को छोड़कर) पश्चिमी उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड के तराई क्षेत्र, जम्मू कश्मीर के जम्मू एवं कठुआ जिले व हिमाचल प्रदेश का ऊना जिला एवं पॉटा घाटी को मिलाकर बनाया गया है। उत्तरी पूर्वी मैदानी क्षेत्र को पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार एवं झारखण्ड को मिलाकर बनाया गया है, जबकि मध्य क्षेत्र में मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात, राजस्थान के कोटा एवं उदयपुर संभाग तथा उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र को शामिल किया गया है।

डीडब्ल्यूआरबी 137 किस्म का क्षेत्रवार प्रदर्शन



डीडब्ल्यूआरबी 137 किस्म की प्रमुख विशेषताएँ

- छः पंक्ति जौ की यह किस्म सिंचित एवं समय से बीजाई के लिए उपयुक्त है।
- इसकी बालियाँ हरी, सीधी एवं सघन हैं, तथा पौधों की औसत लम्बाई 94 सेंटीमीटर है।
- यह किस्म अधिक आनुवंशिक उपज क्षमता एवं उच्च गुणवत्ता के आधार पर अन्य जाँचक किस्मों से श्रेष्ठ है।

- इस किस्म में पीला रतुआ रोग के विरुद्ध उच्च स्तर की प्रतिरोधकता है। साथ ही यह किस्म अन्य रोग एवं कीटों के लिए भी अच्छे स्तर की प्रतिरोधकता से परिपूर्ण है।
- यह किस्म लगभग 127 दिन में पककर तैयार हो जाती है।
- इस किस्म के दाने मोटे एवं बेहतर अनाज गुणवत्ता के साथ 1000 दानों का वजन 47 ग्राम है।



डीडब्ल्यूआरबी 137 किस्म का क्षेत्रवार तुलनात्मक विश्लेषण

गुणवत्ता मानक	उत्तर पश्चिमी मैदानी क्षेत्र	उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्र	मध्य क्षेत्र
हेक्टोलीटर वजन (कि.ग्रा./हेक्टोलीटर)	60.83	54.93	65.7
मोटे दाने (प्रतिशत)	85.30	75.63	88.9
पतले दाने (प्रतिशत)	3.23	—	4.2
1000 दानों का वजन (ग्राम)	47	40.37	47.0
प्रोटीन (प्रतिशत)	10.14	11.0	12.7
पौधे की औसत लम्बाई (सेंटीमीटर)	94	88	93.00
पकने की अवधि (दिनों में)	127	115	113
औसत उपज (कुंतल/हैक्टर)	52.20	37.93	42.49
उपज क्षमता (कुंतल/हैक्टर)	80.0	53.6	67.4

उत्पादन की दृष्टि से डीडब्ल्यूआरबी 137 को उत्तर पश्चिमी मैदानी क्षेत्र, उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्र एवं मध्य क्षेत्र में अन्य जाँचक किस्मों जैसे बीएच 959, पीएल 751, आरडी 2786, बीएच 946, बीएच 902 एवं आरडी 2552 आदि के साथ परखा गया और इसे उत्पादन की दृष्टि से श्रेष्ठ पाया गया।

उत्पादन हेतु महत्वपूर्ण सस्य क्रियाओं की सिफारिशें

फसल की अच्छी गुणवत्ता एवं अधिकतम उत्पादन में सस्य क्रियाओं का महत्वपूर्ण योगदान है। डीडब्ल्यूआरबी 137 किस्म के अधिकतम उत्पादन एवं अनाज की उच्च गुणवत्ता प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित सस्य क्रियाओं की सिफारिशों की गई हैं।

भूमि एवं बीजाई का समय

जौ की यह किस्म उत्तर पश्चिमी मैदानी क्षेत्र में सिंचित व समय से बीजाई (10–25 नवम्बर) के लिए उपयुक्त है। इसके लिए अच्छे जल निकास वाली समतल एवं हल्की दोमट मिट्टी सर्वोत्तम मानी जाती है।

बीज उपचार

बीज जनित रोग के सफल प्रबंधन के लिए बीज को कवकनाशी कार्बोक्सिन 37.5 प्रतिशत + थीरम 37.5 प्रतिशत डब्ल्यूएस की 3.0 ग्राम मात्रा से प्रति किलोग्राम बीज अथवा टेबुकोनाजोल 2डीएस की 1.0 ग्राम मात्रा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें।

बीज दर

सभी क्षेत्रों में इस किस्म की समय से बीजाई के लिए 100 किलोग्राम बीज प्रति हैक्टर की दर से डालने की सिफारिश की गई है।

पंक्ति से पंक्ति की दूरी एवं बीजाई की विधि

पंक्ति से पंक्ति की दूरी 23 सेंटीमीटर तथा पौधे से पौधे की दूरी 5 सेंटीमीटर रखनी चाहिए। जौ की बीजाई के लिए खाद व बीज ड्रिल सबसे उपयुक्त एवं वैज्ञानिक विधि है।

उर्वरक प्रबंधन

खाद्य जौ के उद्देश्य से बीजाई की गई फसल में नत्रजन की मात्रा 60 किलोग्राम, फास्फोरस 30 किलोग्राम एवं पोटाश 20 किलोग्राम प्रति हैक्टर की दर से डालना चाहिए। नत्रजन की आधी मात्रा, फास्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा बीजाई के समय डालें तथा नत्रजन की शेष मात्रा पहली सिंचाई के बाद डालें।

खपतवार नियंत्रण

जौ की फसल में संकरी पत्ती वाले खरपतवारों (मंडूसी/कनकी/गुल्ली डंडा, जंगली जई, लोमड़ घास) के नियंत्रण के लिए आइसोप्रोटुरॉन (75 डब्ल्यूपी) 1333 ग्राम या पिनोक्साडेन (5 ईसी) 700–800 ग्राम प्रति हैक्टर की दर से प्रयोग करें। सभी खरपतवारनाशी/शाकनाशी का छिड़काव बीजाई के 30–35 दिन बाद 400–500 लीटर पानी में घोल बनाकर फ्लैट फैन नोजल से करें। बहुशाकनाशी प्रतिरोधी कनकी के नियंत्रण के लिए पेन्डीमैथालिन (30 ईसी) 3333–4950 ग्राम को 400–500 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टर की दर से बीजाई के तुरन्त बाद (2–3 दिन के अन्दर) प्रयोग करें।

सिंचाई

इस किस्म की अच्छी उपज लेने के लिए सामान्यतः 2–3 सिंचाईयों की आवश्यकता होती है। पहली सिंचाई कल्ले निकलते समय (बीजाई के 30–35 दिन बाद), दूसरी सिंचाई बीजाई के 65–70 दिन बाद तथा तीसरी सिंचाई दानों में दूध बनते समय 95–105 दिन के बाद करना आवश्यक है।

कटाई एवं मढ़ाई

जौ की फसल मार्च के अन्त से अप्रैल के पहले पखवाड़े तक पककर तैयार हो जाती है। इसकी कटाई पूर्ण पकने की अवस्था में हांसिए/दरांती से मजदूरों द्वारा करा लेनी चाहिए। आजकल कटाई एवं बंधाई के लिए हार्वेस्टर का भी प्रचलन है। कटी हुई फसल को 2–3 दिन बाद पावर थ्रेशर से मढ़ाई करें। कम्बाईन हार्वेस्टर से कटाई, मढ़ाई एवं ओसाई का कार्य एक साथ संपादित किया जा सकता है।

उपज

उत्तर पश्चिमी मैदानी क्षेत्र एवं मध्य क्षेत्र में इस किस्म की औसत उपज क्रमशः 52.20 कुंतल एवं 42.49 कुंतल प्रति हैक्टर है, जबकि उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्र में इसकी औसत उपज 37.93 कुंतल प्रति हैक्टर प्राप्त की जा सकती है।

प्रथम प्रकाशन : अक्टूबर 2022

प्रतियाँ : 2000

प्रकाशक : डॉ. ज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह, निदेशक

भाकृअनुप-भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान, करनाल

<https://iiwbr.icar.gov.in/>